प्रातः क्लास 27-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। भक्त और भगवान। दो चीज है ना। बच्चे और बाप। भक्त तो ढेर के ढेर हैं। भगवान है एक। तुम बच्चों को तो बहुत सहज बात लगती है। आत्मायें शरीर द्वारा भक्ति करती रहती है। क्यों? भगवान बाप से मिलने के लिए। तुम भक्त अब ड्रामा को समझ गये हो। अभी तुम भक्त हो। जब पूरे ज्ञानी बन जाओगे तो यहां ही नहीं रहोगे। स्कूल में पढ़ते हैं, इम्तहान पास किया तो फिर दूसरे दर्जे में चले जाते हैं। अभी तुमको भगवान पढ़ा रहे हैं। भगवान और भक्तों को पढ़ा रहे हैं। ऐसे ही कहेंगे। ज्ञानी को पढ़ाई की दरकार ही नहीं रहती। भक्तों को भगवान पढ़ा रहे हैं। तुम जानते हो हम आत्मा भक्ति करती थी। अब भक्ति से निकल ज्ञान में कैसे जावें यह बाप सिखाते हैं। अब भक्ति करते नहीं हो परन्तु देहाभिमान में तो आ जाते हो। यह भी तुम समझते हो। वह भक्त लोग तो भगवान को भी जानते नहीं हैं। खुद ही कहते हैं हम नहीं जानते हैं। सन्यासी जो बनते हैं उनसे भी पूछते हैं तो तुम जिस भगवान की भक्ति करते थे उनको जानते थे। वास्तव में भगवान भी होना चाहिए एक। आजकल अनेक भगवान हो गये हैं। अपने को भगवान कहते रहते हैं। इसको कहा जाता है अज्ञान। भक्ति में घोर अंधियारा है। वह है ही भक्ति मार्ग। भक्त लोग गाते हैं ज्ञान अजनं सद्गुरु दिया अज्ञान अंधेर विनाशा। गुरु तो ढेर है ना। बच्चे अभी समझते हैं और हम भक्ति मार्ग में क्या2 करते थे। किसको याद करते थे पूजे पूजते थे। वह भक्ति का अंधियारा तुम्हारा छूट गया है। क्योंकि बाप को जान लिया है। बाप ने परिचय दिया है मीठे2 बच्चे तुम आत्मा हो। तुमने इस शरीर साथ पार्ट बजाया है। तुम्हारा है बेहद का ज्ञान। बेहद का पार्ट बजाते रहते हो। हद से निकल कर बेहद में चले गये हो। यह दुनिया भी बढ़ते 2 कितनी बेहद में चली गई है। फिर जरूर हद में आवेंगी। हद से बेहद में कैसे बेहद से हद में फेरे आते हैं। अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है। समझते हो यह तो बहुत ही सहज बात है। आत्मा 2 तो सब कहते रहते हैं। आत्मा छोटी स्टार मिस्ल है इतना भी समझते हैं। फिर भी इतना बड़ा लिंग बना देते हैं। वह भी क्या करें। क्योंकि छोटी बिन्दी की तो पूजा कर नहीं सकते। कहते हैं भृकुटि के बीच चमकता है अजब सितारा। अभी उस सितारे की भक्ति कैसे करें। भगवान का तो किसको भी पता नहीं है। आत्मा का मालूम है। आत्मा भृकुटि के बीच रहती है। बस। यह बुद्धि में नहीं आता कि आत्मा ही शरीर से पार्ट बजाती है। यह तुम बच्चों को अभी समझाया है। तो भक्ति मार्ग भी कितना बुद्धि को पाता रहता है। पहले2 तुम ही पूजा करते थे परन्तु जानते नहीं थे। मालूम नहीं था। बड़े2 लिंग बनाते थे। जैसे पाण्डवों के बड़े2 चित्र बनाते हैं। रावण का भी दिन प्रति दिन बड़ा चित्र बनाते जाते हैं। छोटा रावण तो बना न सके। मनुष्य तो छोटा होता है फिर बड़ा होता है। रावण को कब छोटा नहीं दिखाते। वह तो छोटा बड़ा होता ही नहीं। वह कोई चीज़ ही नहीं। रावण 5 विकार को कहा जाता है। 5 विकारों की बुद्धि होती जाती है क्योंकि तमोप्रधान बनते जाते हैं। आगे देहाभिमान इतना नहीं था। फिर बढ़ता गया है। एक की पूजा की फिर दूसरे की पूजा की ऐसे2 बुद्धि को पाते गये हैं। और आत्मा तमोप्रधान बन गई है। ऐसे2 कर्तव्य करते हैं। पहले कोई 4-5 बच्चे इकट्ठे पैदा नहीं करते थे। अभी तो तमोप्रधान बन गये हैं ना। सतो रजो तमो होते हैं ना। अभी कहा जाता है तमोप्रधान। सतोप्रधान और तमोप्रधान में फर्क देखो कितना है। दुनिया में और कोई मनुष्य नहीं होगा जिसको यह बुद्धि में हो। जरा भी पता नहीं है कब सतोप्रधान होते हैं फिर कब तमोप्रधान बनते हैं इन बातों की जानकारी मनुष्यों को नहीं है। नालेज कोई कठिन नहीं है। बाप बिल्कुल सहज ज्ञान आकर सुनाते हैं। पढ़ाते हैं। फिर भी सारी पढ़ाई का तन्त रह जाता है। हम आत्मा बाप के बच्चे हैं। बाप को याद करना है। यह भी गायन है कोटों में कोऊ·· कितने थोड़े निकलते हैं। कोटों में कोऊ ही यथार्थ रीति जानते हैं। किसको? बाप को। कहेंगे बाबा कब ऐसे होता है क्या। अपने बाप को तो सभी जानते हैं। जानवर भी जानते हैं। बाप को क्यों भूल गये हो। इसका नाम ही है भूल-भूलईया का खेल। एक होता है हद का बाप दूसरा होता है बेहद का बाप। दो बाप से वरसा मिलता है। हद के बाप से थोड़ा वरसा मिलता है।

दिन प्रति दिन बिल्कुल थोड़ा होता जाता है। जैसे कि कुछ भी है नहीं। बाप न आये तो पेट ही न भरे। पेट जैसे सारा खाली हो गया है। बाप आकर पेट भरते हैं। हर बात में पेट ऐसा भर देते हैं जो तुम बच्चों को कोई चीज़ की दरकार ही नहीं रहती। सभी आशाएं पूर्ण कर देते हैं। तृप्त आत्मा हो जाती है। जैसे ब्राह्मणों को खिलाते हैं तो आत्मा तृप्त हो जातीहै। यह है बेहद की तृप्ती। फर्क देखो कितना है। आत्मा के हद की तृप्ती और बेहद की तृप्ती में कितना फर्क है। बाप को जानने से ही तृप्त हो जाते हैं। क्योंकि बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। तुम जानते हो हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। बाप को सभी याद तो करते हैं ना। भल कोई2 कहते हैं यह तो नेचर है, हम ब्रह्म में लीन हो जावेंगे... बाप ने समझाया है ब्रह्म में लीन कोई होता नहीं। अनादी ड्रामा है जो फिरता रहता है। इसमें मुंझने की बिल्कुल ही दरकार नहीं। सतयुग त्रेता वा द्वापर कलियुग इन में जो कुछ होता है सो फिर हू बहू रिपीट होता रहेगा। चक्र फिरता रहता है ना। बाप एक ही है, दुनिया भी एक ही है। वह लोग कितना माथा मारते हैं, समझते हैं चन्द्रमा में भी दुनिया है। सितारों में भी दुनिया है। कितना खोजते थे। चांद में प्लाट लेते थे। अभी यह हो कैसे सकता। किसको पैसा देंगे। इसको कहा जाता है सांयस का घंमण्ड। बाकी कुछ भी है नहीं। कोशिश करते रहते हैं। इसको कहा जाता है अति मुर्खता। दुनिया अतिमुर्ख बन गई है। यह माया का पम्प है ना। स्वर्ग से भी जास्ती शो कर दिखाते हैं। स्वर्ग को तो भूल ही गये हैं। स्वर्ग में तो अथाह धन था। एक मंदिर से ही देखो कितना धन ले गये। भारत में ही इतना धन था ना। बहुत खजाना भरपूर था। मुहम्मदगजनवी आया लूट कर ले गया। आधा कल्प तो तुम समर्थ रहे। चोरी आदि का कुछ भी नाम नहीं था। रावण राज्य ही नहीं। रावण राज्य शुरु हुआ और यह चोरी चकारी झगड़े आदि शुरु हुये। रावण का नाम लेते हैं परन्तु रावण कोई चीज़ है नहीं। विकारों की प्रवेशता हुई। रावणके लिए क्या2 मनुष्य करते हैं। कितना मनाते हैं। तुम अभी समझते हो हम भी दशहरा मनाते थे, देखने जाते थे रावण को कैसे जलाते हैं फिर सोना लूटने जाते थे। है क्या चीज़? अभी वन्डर लगताहै। समझते भी थे कि यह सोनानहीं है फिर भी क्या2 करते थे। क्या बुधि बन पड़ी थी। तो यह सब बाप बैठ समझाते हैं। जो अपन को भगवान कहलाते हैं, पूजा कराते हैं उनके लिए बाप ने कहा है हिरण्यकश्यिपु। तो भक्ति मार्ग में शास्त्रों की कितनी दन्तकथाएं हैं। कितनी पूजाएं आदि करते हैं। कोई बड़ा दिन होता है तो क्या2 करते रहते हैं। भक्ति मार्ग जैसे गुड्डियों का खेल है। वह भी कितना समय चलता है। यह तुम जानते हो। शुरु में इतना नहीं करते थे। फिर बुधि को पाते2अभी तो देखो क्या हो गया है। शुरु में थोड़ेई इतने चित्रों आदि के छपाई का काम था। यह क्रिश्चन लोग जब आये हैं तब से यह शुरु हुये हैं। यह ख्याल किया जाता है ना कब बनी। जब वह लोग आये बुधि को पाया। तब छपाया है। इतना चित्रों आदि पर खर्चा कर मंदिर आदि क्यों बनाते हैं। यह है वेस्ट आफ टाईम। मंदिर बनाने में लाखों रुपया खर्चा करते हैं। बाप कितना प्यार से बैठसमझाते हैं। हम ने तुम बच्चों को इतना अथाह धन दिया वह सभी कहा गंवाया। अभी तुम भी समझते हो हमरावण-राज्य में क्या से क्या बन गये हैं। ऐसे नहीं कि ईश्वर की भावी पर राजी रहना है। यह कोई ईश्वर की भावी नहीं। यह तो ड्रामा की भावी है। अभी तुमको ईश्वर का राज-भाग मिलता है। वहां तो दुःख की कोई बात होती ही नहीं। ईश्वर की भावी और आसुरी भावी में कितना फर्क है। यह समझ तुमको अभी मिलती है। सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। ज्ञान का इन्जेक्शन किसको लगता है, किसको नहीं लगता है। यह तो समझ सकते हो फलानी को ज्ञान का इन्जेक्शन अच्छा लगा हुआ है। फलानी को कम लगा हुआ है। इनको बिल्कुल लगा हुआ नहीं है। यह तो बाबा ही जानते हैं ना। सर्विस पर सारा मदार है। सर्विस से ही बाप बतावेंगे। इनको इन्जेक्शन लगा हुआ नहीं है। बिल्कुल सर्विस नहीं जानते। ऐसे भी होता है। कोई छिपी हुई तो नहीं है। बाप जानते हैं किसको जास्ती इन्जेक्शन लगा हुआ है, किसको कम। ज्ञान अंजन सद्गुरु दिया... भक्ति को ज्ञान कहा जाता है। अगर ऐसा कोई समझे तो फिर कोई भक्ति करे? बिल्कुल नहीं। परन्तु समझते नहीं हैं। वहलोग तो भक्ति को ही ज्ञान समझते हैं। भक्ति को भक्ति, पढ़ाई को ज्ञान समझ बैठे हैं। ---

गाते भी है कि ज्ञान शान्तिः सुख का सागर परमात्मा है। फिर उनको ही ठिकाने भितर मे ठोक देते है। बच्चे निश्य होना चाहिये। बेहद का बाप हमको बेहदकी शिक्षा देते है। गाते भी है बेहद का बाबा। आप जब आवेगे तो हम आपके ही बनेगे। आपके मत पर ही चलेगे। भक्ति मार्ग में तो बाप का मालूम पड़ता है। यह पार्ट अभी ही चलता है। अभी ही बाप पढ़ाते है। तुम जानते हो कि यह पढाई फिर पांच हजार साल के बाद पढेगे। बाप फिर पाच हजार वर्ष बाद ही आवेगे। आत्मोय सभी भाई-2 है। फिर शरीर धारन कर पार्ट बजाती है। मनुष्य सृष्टी वृधी को पाती रहती है। आत्माओं का भी स्टाक है नां। जितना मनुष्यो को स्टाक होगा उतना ही वहां पर आत्माओं का स्टाक होगा। एक भी कमती जास्ती नही होगा। यह सभी बेहद के ऐक्टर्स है। उन सभी को आनादी पार्ट मिला हुआ है। यही वण्डर फुल खेल है नां। अभी तुम बच्चे कितने समझ दार बने हो। यह पढ़ाई कितनी ऊची है। परन्तु कोई बडी यूनिवरसिटी आद है नही। इनका नाम ही है पाठशाला। पाठशाला तो बहुत छोटी भी होती है। गीता पाठशाला कहते है नां। सब शास्त्र मई गीता परन्तु है कितनी छोटी। वेद शास्त्र आद भी कितने बडे-2 बनाते है। उठा भी नही सकते है। गीता बहुत छोटी भी बनाते है। इन सभी बातो को अभी तुम बाप दवारा समझ गये हो। क्योकि बाप ही ज्ञान का सागर है बाकी सभी तो है भक्ति के सागर। जैसे ज्ञान का मान है वैसे भक्ति का भी मान है। कितना मनुष्य दान पुण्य करते है। ईश्वर अर्थ बहुत पैसे रखते है। क्योकि वेदशास्त्र आद बहुज बनाते है। अभी तुम बच्चो को भक्ति और ज्ञान का अन्तर मिला है। कितनी विशाल बुधी चाहिये। तुम्हारी कब भी कोई मे आखे नही जावेगी। तुम कहोगे कि हम राजा यां रानी को देखे? वो तो सभी भ्रष्टाचारी है। अभी खत्म हो जाने वाले है। आठ सालो मे ही यह सभी खत्म होने है इनको भला क्या देखना है। दिल मे कोई भी आश नही होती है कि यह देखे यह करे। यह तो सभी खत्म हो जाने वाली चीजे है। जो कुछ बनाते है। जिसके पास भी जो कुछ है वो सब खत्म हो जाना है। पेट तो एक टुकडा ही लेता है। इस समय दुनियां मे पाप ही पाप है। पेट पाप बहुत कराते है। एक दो पर झूठे कलंक लगा देते है। पैस भी बहुत ढेर कमाते है। कितने पैसे छुपा लेते है। सरकार भी क्या कर सकती है। पर कोई कितना भी छिप नही सकेगा। अभी तो नैचरल कलेमिटीज आनी है। वो तो सभी गुम कर देता है। बाकी थोडा समय है। बाप कहते है कि शरीर निर्वाह अर्थ तो भले कुछ भी करो। इसके लिय मनाह नही करते है। बच्चो को तो खुशी का बहुत पारा चढा रहना चाहिये। बाप और वर्सा याद रहे। बाप तो सारे ही विश्व का मालिक तुमको बनाते है। धरती आसमान आद सभी अपना हो जाता है। कोई की भी हद नही रहती है। बच्चे जानते है कि हम ही मालिक थे। भारत अविनाशी खण्ड गाया हुआ है नां। तो तुम बच्चो को अन्दर मे कितनी खुशी रहनी चाहिये। हद की पढाई की भी खुशी होती है नां। यह तो बेहद की पढाई बेहद का बाप ही पढ़ाते है। तो ऐस बाप को तो कितना नही याद करना चाहिये। बच्चे समझ तो सकते है कि जिस्मनी धन्धा आद क्या है। कुछ भी नही। हम बाप से तो क्या वर्सा पाते है। कितना रात-दिन का फर्क है। हम तो यह जिस्मानी धन्धा आद छोड कर डबल सिरताज बनेगे। बाप आया है पढाने। तो बच्चो को तो खुशी होनी चाहिय नां। और काम काज भी साथ-2 करते रहे। यह तो समझते हो नां कि यह पुरानी दुनियां है इसके ही विनाश के लिय सभी तैयारियां हो रही है। ऐसे-2 काम करते है जो डर आता है कि कही पर बडी लडाई नही लग जावे। यह सभी कुछ ड्रामा अनुसार बना है। ऐस नही कि ईश्वर कराते है। यह तो ड्रामा मे ही नूंध है। आज नही तो कल विनाश होना ही है। अभी तुम पढ़ रहे हो तो तुम्हारे लिये नई दुनियां तो जरूर चाहिय नां। यह सभी बाते याद करके अन्दर मे खुशी होनी चाहिय। बाबा ने यह रथ ले लियां। इनको तो कुछ भी है नही। सब कुछ छोड दिया। देखा कि बेहद की बादशाही मिलती है तो फिर यह सब क्या करेगे। बाबा का तो गीत भी बनाया हुआ है। 'अल्फ को अल्लाह मिला तो वो यह गधाई क्या करेगे' 'कम जास्ती देकर एकदम ही काम खत्म कर दिया। अभी ते कुछ है नही। शरीर भी बाबा को दे दिया। वाहः- हम तो विश्व का मालिक बनते है। भल घर मे रहो पर बाप को याद करते रहो। ओम